Educational Trend (A Journal of RIE, NCERT, Ajmer), Volume 5, Issue 2, July 2024
ISSN: 2583-6269

दृष्टि बाधित बालकों के विकास में समावेशी शिक्षा की भूमिका

रेखा रानीए डॉ. सपना वर्मा
वनस्थली विद्यापीठ, निवाई (जयपुर).
Email: rekha26684@gmail.com

सारांशः— *समावेशी शिक्षा की आवश्यकता प्रत्येक बालक के विकास में महत्वपूर्ण है क्योंकि बालक समावेशी शिक्षा की सहायता से सामान्य रूप से शिक्षा ग्रहण करता है व स्वयं को सामान्य बालक के समान बनाने का प्रयास करता है। समावेशी वातावरण में प्रत्येक बालक सुरक्षित महसूस करता है एवं उसमें अपनत्व की भावना का विकास होता है। समावेशी शिक्षा व्यवस्था में विशेष आवश्यकता वाले बालकों को सामान्य बालकों के साथ मानसिक रूप से प्रगति के अवसर प्रदान किए जाते हैं जिससे प्रत्येक बालक रूचि के साथ कार्य करता है। दृष्टि बाधित बालक स्वयं को किसी भी प्रकार से अन्य बालकों से भिन्न नहीं समझता है एवं उसमें हीन भावना उत्पन्न नहीं होती। इस प्रकार समावेशी शिक्षा पद्धति बालकों की सामान्य मानसिक प्रगति में सहायक है।*

समावेशी शिक्षा सभी नागरिकों को समानता का अधिकार प्रदान करती है। इसके द्वारा बिना किसी भेदभाव के विशेष आवश्यकता वाले बालकों व सामान्य बालकों को एक ही पटल पर शिक्षा दी जाती है। शिक्षा का समावेशीकरण एक सामान्य छात्र और विकलांग छात्र को समान शैक्षिक गतिविधियों का अधिकार प्रदान करता है। समावेशी शिक्षा, शिक्षा के अधिकार को प्राप्त करने का एक सकारात्मक प्रयास है। इसका मुख्य उछेश्य सभी बालकों को चाहे वह मानसिक, शारीरिक एवं संवेगात्मक रूप से कमजोर हो, बिना भेदभाव किए एक साथ शिक्षा के समान अवसर उपलब्ध कराना है। सभी बालकों को सीखने की विधियों और गति में आपसी भिन्नता के बाद भी समावेशी शिक्षा सीखने के समान अवसर प्रदान करने पर बल देती है तथा यह विविधताओं और सभी बच्चों की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु परम्परागत स्कूल व्यवस्था में परिवर्तन लाने का प्रयास करती है। इस प्रकार समावेशन को मुख्य धारा की शिक्षा व्यवस्था में सभी शिक्षार्थियों की स्वीकृति के रूप में भी स्पष्ट किया जाना चाहिए जहाँ पर विशेष आवश्यकता वाले बालकों को, सामान्य बालकों के साथ एक ही परिवेश में शिक्षा प्रदान की जाए और उनकी शिक्षा के लिए सभी शिक्षकों की जिम्मेदारी सुनिश्चित की जाए।

दृष्टि बाधित बालकों के विकास के लिए समावेशी शिक्षा तभी उपयोगी हो सकती है। जब वातावरण पर पूर्ण नियंत्रण एवं भेदभाव रहित शिक्षा हो जिससे समाज में नैतिकता की भावना, प्रेम, सहानूभुति, आपसी सहयोग जैसे गुणों का विकास होगा। आज समाज में बदलाव लाना है तो समावेशी शिक्षा को अधिक से अधिक प्रोत्साहन देना होगा। समाज में विशेष आवश्यकता वाले बालक अगर सामान्य बालकों की तरह शिक्षा प्राप्त करेंगे तो वह आत्मनिर्भर होकर समाज के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान कर पाएँगे।

Keywords**:** समावेशी शिक्षा, दृष्टि बाधिता।

आज के समय में जनसंख्या बढ़ने से बालकों की संख्या के साथ—साथ उनकी बढ़ती हुई विभिन्नतायें भी एक समस्या का रूप ले रही है। इन सभी प्रकार की विभिन्नताओं को साथ लेकर सभी को

समान शिक्षा प्रदान करना समावेशी शिक्षा का प्रमुख उछेश्य है। यह शिक्षा भाषा धर्म, लिंग, संस्कृति, सामाजिक, शारीरिक एवं मानसिक गुणों की विविधता वाले बालकों को एक–दूसरे से सीखने, सामाजिक रूप से सम्बन्धित होने व समायोजित होने के बहुमूल्य अवसर प्रदान करती है। वर्तमान में समावेशी शिक्षा अपरिहार्य आवश्यकता बन गई है। यह वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक एवं राष्टीय विकास की दृष्टि से यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। सभी बालकों को एक समान शिक्षा प्रदान करना जरूरी है। समावेशी शिक्षा द्वारा समाज के उन सभी वर्गो की शिक्षा व विकास पर बल दिया गया है जो पहले वंचित रहे हैं या जिनकी आवश्यकताओं को अनदेखा किया गया है। इसके द्वारा विशेष आवश्यकता वाले बालकों के व्यक्तिगत, सामाजिक एवं भावी रोजगार में बालकों की क्षमता का विकास करने तथा अवसर देने की आवश्यकता को भी पूरा किया जाता है।

समावेशी शिक्षा ''सबके लिए शिक्षा की अवधारणा पर ही नहीं बल्कि सबके लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की अवधारणा पर आधारित है। इस शिक्षा प्रणाली में बच्चों की शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, सामाजिक, सांस्कृतिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाता है। इस पद्धति में शिक्षण प्रक्रिया ऐसे नियोजित की जाती है जिससे कि हर बच्चा अपना सम्पूर्ण विकास कर सके और अपनी योग्यता व क्षमता को विकसित कर सके इसके माध्यम से निःशक्त बच्चे जो मुख्य धारा में नहीं थे या मुख्य धारा से हट गए हैं उन्हें समावेशी शिक्षा द्वारा मुख्य धारा में लाया जा सकता है व जिनकी सीखने की गति कम है उन्हें आसानी से सिखाया जा सकता है। इस शिक्षा प्रणाली से विशेष बच्चों की विशेष आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर उनके विकास पर ध्यान दिया जाता है।

भारत के संविधान में भी स्पष्ट कहा गया है कि किसी भी बच्चे को जाति, धर्म, भाषा, शारीरिक अक्षमता, लिंग आदि के कारण शिक्षा से वंचित नहीं किया जा सकता है। इसका निर्वहन करने तथा इसकी प्रगति के लिए शिक्षा का अधिकार कानून भी बना दिया गया है। जिसके अनुसार शिक्षा प्राप्त करना प्रत्येक बच्चे का अधिकार है। उसे कोई भी शिक्षण संस्थान शिक्षा देने से इंकार नहीं कर सकता। समावेशी शिक्षा सभी को शिक्षा प्रदान करने का आह्वान करती है।

शिक्षा का अधिकार प्रत्येक बच्चे का संवैधानिक अधिकार है। समावेशी शिक्षा, शिक्षा के अधिकार को प्राप्त करने के लिए एक सकारात्मक प्रयास है। इसका मुख्य उद्देश्य सभी बालकों को चाहे वह मानसिक, सामाजिक, शारीरिक, संवेगात्मक रूप से कमजोर हो, उन्हें एक समान व सामान्य बालकों के साथ शिक्षा प्रदान करना व बालकों के अधिकार का सम्मान करना समावेशी शिक्षा का प्रमुख उछेश्य है।

समावेश

समावेशन का अर्थ समावेशित या अन्तर्विष्ट करना है अर्थात् विविधताओं को जोड़ना है।

समावेशी शिक्षा की व्यवस्था में समुदाय, अभिभावक, स्कूल प्रशासक, शिक्षक तथा नीति निर्माताओं का पूर्ण सहयोग व समावेशन प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है।

समावेशी शिक्षा की अवधारणा

समावेशी शिक्षा एक ऐसी शिक्षा होती है जिसमें सामान्य बालक–बालिकाएँ, मानसिक तथा शारीरिक रूप से बाधित बालक एवं बालिकाएँ सभी एक साथ बैठकर एक ही विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करते हैं। समावेशी शिक्षा सभी नागरिकों के समानता के अधिकार की बात करती है और इसीलिए इसके सभी शैक्षिक कार्यक्रम इसी प्रकार के तय किए जाते हैं। ऐसे संस्थानों में विशिष्ट बालकों के अनुरूप प्रभावशाली वातावरण तैयार किया जाता है और नियमों में कुछ छूट भी दी जाती है जिससे कि विशिष्ट बालकों को समावेशी शिक्षा के द्वारा सामान्य विद्यालयों में सामान्य बालकों के साथ कुछ अधिक सहायता प्रदान करने की कोशिश की जाती है।

दृष्टि बाधित बालकों का समावेशन

समावेशन शब्द से तात्पर्य सभी बच्चों को समाहित कर बिना भेदभाव किए एक साथ शिक्षा प्रदान करने से है। दृष्टि बाधित एवं अन्य विशेष आवश्यकता वाले बालकों के शिक्षण–प्रशिक्षण की शुरूआत पृथक व्यवस्था में विशिष्ट विद्यालयों में शुरू हुई। भारत में समावेशन का प्रत्यय का आरम्भ एकीकृत शिक्षा के रूप में हुआ। 70 के दशक से इस बात पर ध्यान दिया जाने लगा कि सभी विशेष आवश्यकता वाले बालकों की शिक्षा सामान्य कक्षा में सम्पन्न कराई जाए। एकीकृत शिक्षा के माध्यम से दृष्टि बाधित बच्चों को सामान्य बच्चों के साथ पास के सामान्य विद्यालय में ही शिक्षा देने की शुरूआत हुई।

दृष्टि बाधित बालक वे बालक होते हैं जो ठीक प्रकार से देख पाने में असमर्थ होते हैं कुछ बालक पूर्णतः दृष्टि बाधित होते हैं तथा कुछ बच्चे आंशिक रूप से दृष्टि बाधित होते हैं। पूर्णतः दृष्टि बाधित बालकों को ब्रेल लिपि तथा बोलने वाली किताबों के द्वारा पढाना आसान होता है। आंशिक रूप से दृष्टि बाधित बच्चों को मोटे छापे की पुस्तकों द्वारा पढाया जाता ळें यह बाधित बालक मानसिक योग्यता की दृष्टि से सामान्य बालकों से कम नहीं होते हैं। शोध तथा अनुसंधानों से यह पता चला है कि यदि इन्हें समुचित शिक्षा दी जाए या शिक्षा का अवसर मिल सके, तब इनकी बुद्धि अचानक बढ़ जाती है।

समावेशी शिक्षा समाज में विशिष्ट तथा सामान्य बालकों के मध्य स्वास्थ्य, सामाजिक वातावरण तथा संबंध बनाने में जीवन के प्रत्येक स्तर पर सहायक सिद्ध होती है। इससे समाज के लोगों में सद्भावना व आपसी सहयोग की भावना बढ़ती रहे।

समावेशी शिक्षा के उद्देश्य–

- समावेशी शिक्षा का उद्देश्य दृष्टि बाधित बालकों में छिपी योग्यताओं का विकास करना।
- दृष्टि बाधित बालकों में जागरूकता की भावना का विकास करना।
- दृष्टि बाधित बालकों में आत्मनिर्भरता की भावना का विकास करना।
- दृष्टि बाधित बालकों के मन में आने वाली हीन भावना को दूर करना।
- दृष्टि बाधित विद्यार्थियों को शिक्षित करके देश की मुख्य धारा से जोड़ना।
- दृष्टि बाधित बालकों को सामाजिक एवं सांस्कृतिक रूप से समाज से जोड़ना।
- दृष्टि बाधित बालकों को जीवन में आने वाली कठिनाइयों का सामना करने योग्य बनाना।

समावेशी शिक्षा की आवश्यकता–

समावेशी शिक्षा की आवश्यकता हर देश में आवश्यक है क्योंकि बालक समावेशी शिक्षा की सहायता से सामान्य रूप से शिक्षा ग्रहण करता है तथा अपने आपको सामान्य बालक के समान बनाने का प्रयास करता है भले ही समावेशी शिक्षा में प्रतिभाशाली बालक, विशिष्ट बालक, अपंग बालक और बहुत सारे ऐसे बालक होते हैं जो सामान्य बालक से अलग होते हैं, उन्हें एक साथ इसलिए शिक्षा दी जाती है ताकि उन बालकों में अधिगम की क्षमता को बढ़ाया जा सके।

- समावेशी शिक्षा के अन्तर्गत समावेशी शिक्षा दृष्टि बाधित बालकों के लिए एक ऐसा अवसर प्रदान करती है जिसमें इन बालकों को सामान्य बालकों के साथ मानसिक रूप से प्रगति प्राप्त करने का अवसर मिलता है।
- समावेशी शिक्षा एक ऐसी शिक्षा है जिसमें शिक्षा के समानता के सिद्धांत का अनुपालन किया जाता है साथ ही इस दिशा के माध्यम से शैक्षिक एकीकरण भी संभव होता है।
- इसमें सामान्य तथा विशेष आवश्यकता वाले बालक दोनों ही एक साथ सामान्य रूप से शिक्षा ग्रहण करते हैं जिससे उन दोनों के बीच प्राकृतिक वातावरण का निर्माण होता है और उनमें एकता, भाईचारा और समानता की भावना उत्पन्न होती है।
- समावेशी शिक्षा में सामान्य बालक और विशिष्ट बालक एक साथ शिक्षा ग्रहण करते हैं तो शिक्षा में भी कम खर्च होता है क्योंकि जहाँ अलग–अलग शिक्षा के लिए जितना खर्च किया जाता है। वह केवल समावेशी शिक्षा कम खर्च या लागत में कर लेता है।
- समावेशी शिक्षा वह शिक्षा होती है जहाँ लघु समाज का निर्माण होता है क्योंकि यहाँ हर तरह के बालक एक साथ शिक्षा ग्रहण करते हैं जिसके कारण उनमें नैतिकता की भावना, प्रेम, सहानुभूति, आपसी सहयोग जैसे गुणों का विकास आसानी से किया जा सकता है।
- समावेशी शिक्षा के द्वारा बालकों में शिक्षण तथा सामाजिक स्पर्धा जैसी भावनाओं का भी विकास किया जाता है।
- समावेशी शिक्षा के अंतर्गत सामान्य छात्रों की अपेक्षा अक्षमता से युक्त छात्रों की शिक्षा पर अधिक ध्यान दिया जाता है ताकि दृष्टि बाधित बालक द्वारा भी सामान्य छात्रों की भाँति शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में भाग लिया जा सके।
- समावेशी शिक्षा समावेश के सिद्धान्त पर आधारित है। अतः इस शिक्षा पद्धति में बालकों में भेदभाव का कोई स्थान प्राप्त नहीं है। इस शिक्षा के द्वारा सभी प्रकार के सामान्य व बाधित बालकों का समुचित समावेश होता है।
- समावेशी शिक्षा के कारण ऐसे दृष्टि बाधित बालक जो शिक्षा प्राप्त करने से वंचित रह जाने के कारण नौकरी व रोजगार न पाकर भिक्षा माँगने के लिए विवश हो जाते थे उन्हें घर के नजदीक की ही शाला में समावेशित कर सामान्य बालकों के साथ शिक्षा प्राप्त करने की सुविधा हो गई है।
- समावेशी शिक्षा दृष्टि बाधित बालकों को घर –ग्राम से दूर स्थित अंध विद्यालयों में जाकर शिक्षा प्राप्त करने के स्थान पर घर के समीप स्थित समावेशी विद्यालय में अपनी ही उम्र के सामान्य विद्यार्थियों के साथ शिक्षा प्राप्त करने का अवसर देकर उन्हें समाज की मुख्य धारा में सम्मिलित करने का प्रयास करती है।

समावेशी शिक्षा का महत्व

- समावेशी शिक्षा के अन्तर्गत दृष्टि बाधित बालकों को अनुकूल शैक्षिक वातावरण प्रदान किया जाता है।
- समावेशी शिक्षा के माध्यम से समानता के उद्देश्यों की प्राप्ति होती है।
- समावेशी शिक्षा द्वारा दृष्टि बाधित बालकों के सामाजिक मूल्यों का विकास होता है।
- आज के युग में समावेशी शिक्षा का विशेष महत्व है क्योंकि समावेशी शिक्षा ही समाज में बदलाव ला सकती है इसलिए समावेशी शिक्षा को अधिक से अधिक प्रोत्साहन देना चाहिए।

आज के युग में समावेशी शिक्षा का विशेष महत्व है क्योंकि समावेशी शिक्षा ही समाज में बदलाव ला सकती है इसलिए समावेशी शिक्षा को अधिक से अधिक प्रोत्साहन देना चाहिए।

दृष्टि बाधित बालकों के विकास में समावेशी शिक्षा निम्न प्रकार से अपनी भूमिका निभाती है–

शिक्षक की भूमिका

दृष्टि बाधित बालकों के विकास में शिक्षण अधिगम व्यवस्था की भूमिका महत्वपूर्ण है। किसी शिक्षण अधिगम व्यवस्था को प्रभावकारी बनाने के लिए शिक्षक की भूमिका सर्वोपरि होती है। समावेशी शिक्षा में शिक्षकों तथा अन्य विशेषज्ञों की भूमिका अहम मानी जाती है। चूंकि समावेशन की प्रक्रिया में सामान्य अध्यापक एवं विशेष आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु विशेष अध्ययन की व्यवस्था होती है।

कक्षाध्यापक की भूमिका

समावेशी कक्षा–कक्ष के अन्तर्गत दृष्टि बाधित बालकों की शिक्षा को प्रभावकारी तथा सफल बनाने के लिए कक्षाध्यापक की अभिवृत्ति इन बालकों के प्रति गहरा प्रभाव डालती है। दृष्टि बाधित बालकों के विकास में कक्षाध्यापक की भूमिका सर्वोपरि है क्योंकि वे सामान्य कक्षा अनुदेशन के लिए उत्तरदायी है। इन बालकों के विकास में कक्षाध्यापक की कुछ महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निम्नलिखित है–

- कक्षाध्यापक द्वारा कक्षा में दृष्टि बाधित बालकों को अन्य बालकों के समतुल्य स्वीकार करना चाहिए।
- दृष्टि बाधित बालकों के अधिकारों की रक्षा के लिए तत्पर रहना।
- विशेष आवश्यकता होने पर विशेष शिक्षक की सेवा प्राप्त करना।
- अनुदेशन को प्रभावकारी बनाने के लिए विशेष उपकरणों का उपयोग करना।
- बालक के माता–पिता से समय–समय पर सम्पर्क स्थापित करना व उनका मार्गदर्शन करना।
- वैयक्तिक बाधाओं को ध्यान में रखते हुए अनुदेशन में आवश्यक बदलाव करना।
- कक्षा में दृष्टि बाधित बालकों को समान अवसर प्रदान करना।
- विकलांगता सम्बन्धी सरकारी योजनाओं, अधिनियमों की समझ रखना तथा उनके लाभ को दृष्टि बाधित बालकों तक पहुँचाने में मदद करना।

विशेष शिक्षक की भूमिका

दृष्टि बाधित बालकों की विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं के समुचित निष्पादन के लिए विशेष शिक्षक की व्यवस्था होती है। विशेष शिक्षक दृष्टि बाधित बालकों की शिक्षा तथा पुनर्वास के लिए विशेष रूप से प्रभावित होते हैं। इनकी भूमिका विशिष्ट होने के साथ–साथ विस्तृत भी होती है।

ब्रेल प्रशिक्षण

दृष्टि बाधित बालकों के लिए ब्रेल प्रशिक्षण की व्यवस्था करनी चाहिए। दृष्टि बाधित बालक ब्रेल के द्वारा पठन व लेखन का कार्य स्पर्श द्वारा करते हैं। ब्रेल छः उभरे बिन्दुओं पर आधारित एक स्पर्शीय लिपि है। ब्रेल पठन का कार्य बाएं से दाएं ओर होता है जबकि लेखन दाएं से बाएं ओर होता है। ब्रेल प्रशिक्षण के द्वारा दृष्टि बाधित बालकों को पढ़ने–लिखने में आसानी होती है।

- दृष्टि बाधित बालकों को ब्रेल पढ़ना लिखना सिखाना।
- ब्रेल प्रशिक्षण, ब्रेल–पूर्व तत्परता कार्यक्रम तय करना।
- ब्रेल लेखन हेतु ब्रेल संबंधी विभिन्न उपकरणों से बालकों को अवगत कराना।

संवेदी प्रशिक्षण द्वारा विकास

- बालक की ज्ञानेन्द्रियाँ उसे अपने वातावरण को स्पष्ट रूप से समझने व अन्तः क्रिया करने में सहायक होती है इन्हीं के द्वारा बालक सम्पूर्ण सूचनाओं और अनुभवों को प्राप्त करता है।
- विशेष शिक्षक द्वारा स्पर्श करने की क्षमता का अधिक विकास करना।
- किसी भी प्रकार की आवाज को स्पष्टता और तत्परता के साथ सुनने का प्रशिक्षण देना।
- गंध एवं स्वाद के माध्यम से वस्तुओं के ज्ञान का प्रशिक्षण देना।
- बची हुई दृष्टि के उपयोग का प्रशिक्षण देना।
- स्पर्श के माध्यम से छोटा–बड़ा, सख्त, मुलायम, ठंडा, गरम, लंबा–चौड़ा आदि के ज्ञान का निर्माण करना।
- पेड़–पौधों, फूल, पत्ते, घास, सब्जी व फल आदि में अंतर करने और समझने का प्रशिक्षण देना।

पहचान ओर शीघ्र हस्तक्षेप

समावेशी शिक्षा के अन्तर्गत दृष्टि बाधित बालक की शीघ्र पहचान करना अत्यन्त आवश्यक है। किसी भी दृष्टि बाधित बालक हेतु समुचित कार्यक्रम का निर्धारण तब तक नहीं किया जा सकता है जब तक दृष्टि बाधिता की पहचान एवं मूल्यांकन न कर लिया जाए। पहचान के बाद नैदानिक मूल्यांकन एवं चिकित्सकीय परामर्श हेतु नेत्र विशेषज्ञ के पास भेजना चाहिए ताकि उन्हें उनकी सुविधानुसार ही सुविधाए उपलब्ध करवायी जाए।

यदि माता–पिता दृष्टि बाधित बालकों की शिक्षा में रूचि नहीं लेते हैं, तो हस्तक्षेप कर दृष्टि बाधित बालकों की शिक्षा के प्रति उनमें उत्साह भरना चाहिए व माता–पिता को उचित परामर्श देकर उनकी उपयुक्त सहायता प्राप्त करनी चाहिए व उनको संतुष्ट करना चाहिए ताकि दृष्टि बाधिता को कम किया जा सकता है। और परिवार के नजरिए में परिवर्तन द्वारा भी इन बालकों के विकास को बढ़ावा दिया जा सकता है।

- लेखन–पठन हेतु उचित माध्यम के उचित चुनाव में सहायता करना।
- दृष्टि बाधित बालकों के लिए विशेष विशेषज्ञों की सलाह लेना।
- कक्षा व अन्य स्थान पर दृष्टि बाधित बालकों को विशिष्ट लक्षणों के आधार पर पहचान करना।
- दृष्टि बाधित बालकों के लिए शीघ्र आवश्यक शैक्षिक पुनर्वास कार्यक्रम की व्यवस्था करना।

बाधामुक्त वातावरण के निर्माण में सहायता

घर तथा विद्यालय के वातावरण का बाधामुक्त होना दृष्टि बाधित बालकों के विकास में अत्यन्त आवश्यक है ताकि दृष्टिबाधित बालक आसपास के वातावरण का सुगमता से उपयोग कर सके। बाधामुक्त वातावरण द्वारा ही दृष्टि बाधित बालक तथा अन्य सेवाओं तक अपनी पहुँच सुनिश्चित कर उनका उपयोग कर सकेगें।

- अध्यापक द्वारा कक्षा, कार्यालय, शौचालय एवं अन्य विद्यालयी संरचनाओं में बाधा की पहचान कराना।
- कक्षा वातावरण को दृष्टि बाधित एवं अन्य बालकों के अनुरूप तैयार करने का प्रयास करना।

संसाधन कक्षा प्रबन्धन

दृष्टि बाधित बालकों के विकास में संसाधन कक्ष महत्वपूर्ण होता है। संसाधन कक्ष में शैक्षिक प्रशिक्षण के लिए उचित एवं आवश्यकतानुसार शिक्षक अधिगम सामग्री रखी होती है। जिसकी जिम्मेदारी विशेष शिक्षक पर ही होती है।

- दृष्टि बाधित बालकों को संसाधन कक्ष में सुगमतापूर्वक प्रशिक्षण उपलब्ध करना।
- उन्हें आवश्यकतानुसार उपकरणों का प्रशिक्षण देना।
- अल्प दृष्टि बाधित बालकों के लिए भी उचित प्रकाशीय तथा अप्रकाशीय उपकरण की व्यवस्था करना एवं प्रशिक्षण प्रदान करना।

मनोसामाजिक समायोजन

दृष्टि बाधित बालक अन्य बालकों के साथ समायोजन नहीं कर पाता है। दृष्टि बाधित बालक को लगता है कि उसे अन्य लोगों से अलग समझा जाता है, क्योंकि वह सभी क्रियाओं में समान रूप से भाग नहीं ले पाता है। कई बार वह अपने आपकों अधूरा व अकेला समझता है। समावेशी शिक्षा द्वारा समाज, माता–पिता व बालकों में सकारात्मक नजरिए का विकास करता है। अनेक अध्ययनों से पता चलता है कि नियमित रूप से मिल–जुलकर कार्य करने से बालकों में सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न होता है।

- बालकों एवं विद्यालय के कर्मचारियों में दृष्टि बाधिता और अन्य विकलांगता के प्रति सकारात्मकता को कम करने पर बल देना।
- विद्यालय प्रबन्धन, छात्राभिभावक एवं अन्य छात्रों को दृष्टि बाधिता के प्रति जागरूक करना व सहयोगी भावना का विकास करना।
- दृष्टि बाधित बालकों एवं अभिभावकों में आसपास की क्रियाओं में भाग लेने की प्रवृत्ति का विकास करना।

- दृष्टि बाधित बालकों हेतु अनुकूलित खेलों से बालकों से अवगत कराना तथा उन्हे एक साथ समय बिताने के लिए प्रोत्साहित करना।

समावेशी शिक्षा में सभी बालकों को एक साथ एक ही कक्षा में शिक्षण कराने से दृष्टि बाधित बालकों में प्रेम, सहयोग, सहनशीलता, सद्भावना, एक–दूसरे का सम्मान आदि गुणों का विकास होता है क्योंकि यह शिक्षा प्रणाली अपने पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों, स्कूल में, कक्षा में या कक्षा के बाहर पारस्परिक क्रिया एवं व्यवहार में गतिशीलता व समायोजन को बल देती है।

समावेशी शिक्षा के लाभ

- ❖ समावेशी शिक्षा के द्वारा बालकों में एकता व समानता का विकास होता है।
- ❖ समावेशी शिक्षा के कारण वैयक्तिक विभिन्नताओं को दूर करने में सहायता मिलती है।
- ❖ समावेशी शिक्षा के कारण दृष्टि बाधित बालक सामान्य बालक के साथ एक ही कक्षा में बैठकर शिक्षा ग्रहण करता है।
- ❖ समावेशी शिक्षा की सहायता से भेदभाव, छूआछूत जैसे भाव को दूर किया जाता है, क्योंकि इसमें सामान्य बालक व दृष्टि बाधित बालक सभी को एक समान लाभ मिलता है।
- ❖ समावेशी शिक्षा द्वारा दृष्टि बाधित बालकों की समस्याओं की पहचान की जाती है तथा उन समस्याओं का समाधान किया जाता है।
- ❖ समावेशी शिक्षा समायोजन की समस्याओं को दूर करने के लिए महत्वपूर्ण है।

पहले दृष्टि बाधित बालकों को पृथक् शिक्षण कराया जाता था इनके लिए पृथक् विद्यालय खोले गए। इस पृथकता के कारण ये बालक सामाजिक रूप से पृथक् होने लगे तथा इनमें हीनता की भावना भी आने लगी। समावेशी शिक्षा में सभी बालक एक साथ मिलकर सामूहिक रूप से अध्ययन करते हैं तथा एक–दूसरे का सहयोग करते हैं। इस प्रकार के वातावरण से ये बालक स्वयं को समाज का ही अंग मानते हैं, तथा इनमें सामाजिकता की भावना का विकास होता है। समावेशी शिक्षा सामाजिक असमानता का खण्डन करती है।

यदि सम्पूर्ण समाज का विकास करना है तो सभी को समावेशी शिक्षा प्रदान करना आवश्यक है। समाज का विकास उसके सुयोग्य बालकों पर निर्भर करता है वर्तमान समय की यह महत्ती आवश्यकता है कि समावेशी शिक्षा के माध्यम से बिना भेदभाव किए प्रत्येक बालक को सशक्त बनाए तथा ऐसे प्रयास किए जाए जिससे सभी बालक अपनी–अपनी योग्यताओं का कुशलतापूर्वक विकास करे। समावेशी शिक्षा ही ऐसी शिक्षा है जिसमें समाज में प्रत्येक बालक को शिक्षा प्रदान करने का प्रावधान है जिससे सभी बालक शिक्षित होकर रोजगार प्राप्त कर सकते है व अच्छे समाज के निर्माण में सहायक हो सकते हैं।

सभी बालकों को एक ही कक्षा में एक छत के नीचे एक समान शिक्षा प्रदान करना वास्तव में कठिन व चुनौतिपूर्ण कार्य है। दृष्टि बाधित बालक यदि सामान्य बालकों के साथ मिलकर कार्य करते हैं तो इनकी क्षमता का विकास होता है, वे अन्य बालकों को देखकर कार्य करने के लिए प्रेरित होते हैं। समावेशी शिक्षा दृष्टि बाधित बालकों को शिक्षा के अधिकार से पूरा लाभ उठाने, अपना विकास करने, स्वाभिमानपूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिए उत्साहित करती है ताकि प्रत्येक बालक को उसकी क्षमताओं, भावी जीवन की

चुनौतियों का सामना करने योग्य बनाती है। व प्रत्येक दृष्टि बाधित बालक की क्षमताओं को ध्यान में रखकर उनकी क्षमताओं का विकास करती है और उसमें सक्षमता की भावना का संचार करती है।

समावेशी शिक्षा बालक में आत्मविश्वास पैदा करती है जब बालक आत्मविश्वासी होता है तो उसके बाद वह आत्म सम्मान के लिए कार्य करता है और वह सामाजिक प्रतिष्ठा को बनाने का प्रयास करता है। शिक्षा बालक में आत्मनिर्भर, आत्मविश्वास व आत्मसम्मान की भावना का विकास करती है। समावेशी शिक्षा का उछेश्य बालकों को आत्मविश्वासी और आत्मनिर्भर बनाना है। इस प्रकार के दृष्टि बाधित बालक भी समाज का अंग है। उनमें भी योग्यताएँ व कौशल पाए जाते हैं। समावेशी शिक्षा के माध्यम से इन बालकों की क्षमताओं व योग्यताओं का विकास किया जाता है उनको अपनी प्रतिभा व क्षमता को निखारने के लिए विकास के अवसर प्रदान किए जाते है जिससे वे भावी जीवन में दूसरों पर निर्भर रहकर आत्मनिर्भर बन सकते हैं।

इस प्रकार समावेशी शिक्षा दृष्टि बाधित बालकों को उपयुक्त प्रशिक्षण प्रदान कर इन बालकों के उत्साह एवं आत्मविश्वास में तो वृद्धि करती ही है एवं इनके विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

दृष्टि बाधित बालकों के विकास के लिए समावेशी शिक्षा तभी उपयोगी हो सकती है। जब वातावरण पर पूर्ण नियंत्रण एवं भेदभाव रहित शिक्षा हो जिससे समाज में नैतिकता की भावना, प्रेम, सहानूभूति, आपसी सहयोग जैसे गुणों का विकास होगा। आज समाज में बदलाव लाना है तो समावेशी शिक्षा को अधिक से अधिक प्रोत्साहन देना होगा। समाज में विशेष आवश्यकता वाले बालक अगर सामान्य बालकों की तरह शिक्षा प्राप्त करेंगे तो वह आत्मनिर्भर होकर समाज के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान कर पाएँगे।

References:

अलीमोविक, एस. (2013). इमोशनल एण्ड बिहेवियरल प्रोब्लमस इन चिल्ड्रन विथ विजुअल इम्पेयरमेन्ट, इन्टलएक्चुअल एण्ड मल्टीपल डिसएबिलिटीस. *जर्नल ऑफ इन्टलएक्चुअल डिसएबिलिटीस रिसर्च, 57(2), 153–160.*

गुप्ता, एस. पी. (2010). *भारत में शिक्षा का विकास.* इलाहाबादः प्रयागपुस्तक भण्डार.

ठाकुर, वाई. (2017). *इन्क्लुसिव एजुकेशन.* आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन.

पंत, पी., एण्ड जोशी, पी. के. (2016). ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ इमोशनल स्टेबिलिटी ऑफ विजुअली इम्पेयरड स्टूडेन्ट्स स्टडिइग एट सेकेंडरी लेवल इन इनक्लूसिव सेटअप एण्ड स्पेशल स्कूलस. *जर्नल ऑफ एजुकेशन एण्ड प्रैक्टिसेस, 7(22), 53–58.* www.dcidj.org से दिनांक 16/8/19 को उद्धृत

भटनागर, ए. बी., अनुराग, एण्ड नीरू. (2017). *इन्क्लुसिव एजुकेशन.* मेरठः आर–लाल बुक डिपो.

सिंह, एम. (2016). *इन्क्लुसिव एजुकेशन.* मेरठः आर.लाल बुक डिपो.

शर्मा, एन., एण्ड सुशील, जी. आर. (2017). *क्रिएटिविटी एन इन्क्लुसिव स्कूल.* जयपुरः ठाकुर पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड.

शर्मा, एस. बी. (2015). शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान एवं राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा की वर्तमान स्थिति. *इन्क्लूसिव टीचर, 2(1), 91.*

Website:

https://sarkariguider.in

https://www.hindisarkariresult.com/samaveshi-shiksha

https://hi.mwikipedia.org>wiki

https://translate.google.com

https://targetnotes.com

https://www.orfonline.org>research

https://mpboardonline.com

https://www.unicef.org/india/hi/node/336